शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मई 2014

वेद मंत्रों में ऐतिहासिक घटनाओं के संकेत

प्रा.एल.एस.पटेल
एम.एम.चौधरी आर्ट्स कॉलेज
राजेंद्र नगर, भिलोड़ा,
गुजरात, भारत

शोध संक्षेप

विश्व वांगमय में वेद सबसे प्राचीनतम ग्रंथ हैं। अनेक विद्वानों ने अपने गहन गंभीर अध्ययन में वेदों के समय निर्धारण और उनकी ऐतिहासिता पर अनेक टीकाएं लिखी हैं। विश्व पुरातात्विक धरोहर केंद्र ने वेद की तीस पांडुलिपियों को सर्वाधिक प्राचीन साहित्य निरूपित किया है। अनेक विद्वान वेदों को ईश्वरकृत मानते हैं और उनमें इतिहास आदि खोजने का प्रयास न करते हुए उनके आध्यात्मिक अर्थ को प्रमुख मानते हैं, जबकि कुछ विद्वान वेदों में ऐतिहासिक तथ्यों को खोजने का प्रयास करते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में वेदों में ऐतिहासिक घटनाओं के संकेतों की चर्चा की गई है।

प्रस्तावना

भरतीय संस्कृति के मूलाधार ग्रंथ वेद हैं। विश्व का सर्वप्रथम वांगमय वेद ही है। मानव सृष्टि के पूर्व परमेश्वर ने उनके कल्याणार्थ वेद का आविष्कार किया। अतः वेद को अनादि और अपौरुषेय कहा जाता है। शतपथ ब्राह्मण में लिखा है कि प्रारंभ में केवल एक प्रजापति की ही सत्ता थी। उसने प्रजा उत्पन्न करने की कामना की और इस प्रयोजन से तय किया, जिसके परिणामस्वरूप पृथ्वी, अंतरिक्ष और द्यु-लोक ये तीन लोक उत्पन्न हुए। इन तीन लोकों को अभितप्त कर प्रजापति ने अग्नि, वायु और सूर्य को उत्पन्न किया और फिर उनके द्वारा तीन वेदों की उत्पत्ति प्रजापति द्वारा की गई। अग्नि द्वारा ऋग्वेद की, वायु द्वारा यजुर्वेद की और सूर्य द्वारा सामवेद की। जहां तक ब्राह्मण ग्रंथों, आरण्यकों, उपनिषदों और कल्प आदि वेदांगों का संबंध है, इतिहास के लिए उनका उपयोग करने में किसी को भी विप्रतिपत्ति नहीं है। पर जो विद्वान वेदों को ईश्वरकृत, अनादि और अपौरुषेय मानते हैं, वे यह स्वीकार नहीं करते कि इतिहास के लिए वैदिक संहिताओं को भी प्रयुक्त किया जा सकता है। जिन वेदमंत्रों में किसी ऐतिहासिक घटना का संकेत मिलता है, ये विद्वान उनका अर्थ अध्यात्मपरक या ग्रंथ प्रकार से करके यह प्रतिपादित करते हैं कि वैदिक मंत्रों में इतिहास की तलाश करना अर्थ का अनर्थ करना है।

ऐतिहासिक घटनाओं के संकेत

वेदों में अनेक जगह पर ऐतिहासिक घटनाओं के संकेत मिलते हैं। उनका उदाहरण ऋग्वेद के चौथे मण्डल के पंद्रहवें सूक्त के मंत्रों में मिलता है। उन मंत्रों को लीजिए, जिनके ऋषि वामदेव हैं। और उन मंत्रों में अश्विनी तथा साहदेव्य नामक जिनके देवता हैं। ये मंत्र निम्नलिखित हैं:

बोधद्यन्मां हरिभ्यां कुमारः साहदेव्यः। अछा न हूत उदरम्।। 6

उतत्या यजता हरी कुमारात्साहदेव्यात्। प्रयता सद्य आददे।। 8

एष वां देवावश्विना कुमारः साहदेव्याः। दीर्घायुरस्तु सोमकः।। 9

तं युवं देवावश्विना कुमारं साहदेव्यम्। दीर्घायुतं कृणोतन।। 10

वेदों में ऐतिहासिक घटनाओं तथा प्राचीन भारत के राजाओं के संबंध में संकेत व सूचनाएं विद्यमान हैं, यह मानने वाले विद्वान इन मंत्रों का अर्थ इस प्रकार करेंगे - 'जब सहदेव के पुत्र कुमार ने दो घोड़ों के साथ मेरा ध्यान किया, तो मैं ऐसे उठ खड़ा हुआ मानो मुझे पुकारा गया है। मैंने सहदेव के पुत्र कुमार से उन घोड़ों को तुरंत ग्रहण कर लिया, जिन्हें कि उसने मुझे भेंट किया था। हे अश्विनी देवो। सहदेव का पुत्र यह कुमार सोमक आपकी कृपा से दीर्घायु हो। अश्विनी देवों ने सहदेव के पुत्र उस युवा कुमार को दीर्घायु कर दिया।'

इन मंत्रों में एक ऐसे सहदेव का उल्लेख है, जिसका पुत्र सोमक था। इस कुमार सोमक ने ऋषि वामदेव को दो घोड़े दान में दिए थे, जिन्हें प्राप्त कर ऋषि ने अश्विनी देवों से उनके दीर्घायु होने की प्रार्थना की थी। अश्विनी देवों की कृपा से साहदेव्य सोमक दीर्घायु को प्राप्त करने में समर्थ हुआ था। पौराणिक अनुश्रुति के अनुसार सहदेव उत्तर पांचाल का राजा था और हस्तिनापुर के पौरव राजा संवरण का समकालीन था। वह महाभारत से 24 पीढ़ी पहले हुआ था। पुराणों के अनुसार भी सहदेव का पुत्र सोमक था, जो अपने पिता के पश्चात् उत्तर पांचाल के राजसिंहासन पर आरूढ़ हुआ था। ऐतिहासिक संप्रदाय के विद्वान जिस ढंग से इन वेद मंत्रों का अर्थ करते हैं, उससे इस बात में कोई संदेह नहीं रह जाता कि इन मंत्रों में साहदेव्य कुमार सोमक के दान की स्तुति है। दान प्राप्त करने वाले ऋषि वामदेव ने उसके दीर्घायु होने की प्रार्थना अश्विनों से की है। पर अन्य विद्वान साहदेव्य और सोमक शब्दों को किन्हीं व्यक्तियों के लिए रूढ़ि न मानकर उनका यौगिक अर्थ करते हैं। उनके मत में साहदेव्य का अर्थ है, "ये देवैः सह वर्तन्ते' जो देवों या विद्वानों के साथ रहते हों और सोमक का अर्थ है - सोम इन शीतल स्वभावो यस्य' जिसका स्वभाव सोम या चंद्रमा के समान शीतल हो। इन विद्वानो के अनुसार विद्वानों या देवों के साथ निवास करने वाले शीतल स्वभाव के शिष्य द्वारा इन मंत्रों में यह प्रार्थना की गई है कि उसे इस ढंग से बोध कराया जाए ताकि वह दूरगामी अश्वों के समान शीघ्र विद्या के पार उतर जाए। विद्वान अध्यापक ने कुमार शिष्य की यह प्रार्थना स्वीकार कर ली और उसे शीघ्र ही सब विद्याओं में निष्णात कर दिया। साथ ही उन्होंने ऐसा यत्न भी किया, जिससे कि शीतल स्वभाव वाला कुमार विद्यार्थी दीर्घायु प्राप्त करने में समर्थ हुआ।

वेदमंत्रों में ऐतिहासिक घटनाओं के कोई संकेत हैं या नहीं, इस संबंध में कतिपय प्राचीन आचार्यों के मंतव्यों पर भी ध्यान देना आवश्यक है। निरुक्तकार यास्काचार्य ने भी कुछ वेदमंत्रों में इतिहास प्रदर्शित किया है। उन मंत्रों पर ध्यान देना आवश्यक है। ऐसे मंत्रों व सूक्तों में ऋग्वेद का वह सूक्त 10 / 18 उल्लेखनीय है, जिसमें कि देवापि और शांतनु के संबंध में अनेक ऐतिहासिक संकेत विद्यमान हैं तथा देवापि का शांतनु पुरोहित होना और उसके द्वारा प्रचुर दान दिया जाना। ऐतिहासिक संप्रदाय के प्राचीन तथा आधुनिक विद्वान जिन वैदिक सूक्तों एवं मंत्रों में ऐतिहासिक घटनाओं के संकेत होना प्रतिपादित

करते हैं। उनमें से कतिपय का उल्लेख करना विषय को स्पष्ट करने के लिए उपयोगी होगा। साहदेव्य सोमक और देवापि शांतनु के संबंध में जो सूचनाएं ऋग्वेद में हैं, उन्हें ऊपर लिखा जा चुका है। कतिपय अन्य महत्वपूर्ण संकेत व सूचनाएं निम्नलिखित हैं: हस्तिनापुर के राजा संवरण और उत्तर पांचाल के राजा सुदास के संघर्ष का स्पष्ट वर्णन ऋग्वेद में विद्यमान है। सुदास ने संवरण को परास्त कर न केवल हस्तिनापुर अपितु यमुना तक के सब प्रदेशों को अपने अधिकार में कर लिया था। सुदास की शक्ति को इस ढंग से बढ़ते हुए देखकर पश्चिम के अनेक राजाओं ने संवरण की सहायता की और एक संगठन बनाकर सुदास का प्रतिरोध करने का प्रयत्न किया। इस संघ में मत्स्य, तुर्वसु, द्रुह्य, शिवि, पक्थ, भलानस्, पुरु, विषाणी और यदु राज्यों व जातियों के राजा सम्मिलित थे। रावी के तट पर सुदास ने इन सबकी सम्मिलित शक्ति को परास्त किया और संवरण ने वहां से भागकर सिंधु नदी के तट पर एक दुर्ग में शरण ली। उत्तर पांचाल राज्य के इसी शक्तिशाली राजा का पुत्र वह सहदेव था, जिसके पुत्र सोमक द्वारा दान में प्रदत्त घोड़ों का उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है। इसके संबंध में ऊपर लिखा गया है। सुदास और संवरण के युद्ध तथा सुदास के शक्ति विस्तार का जो विवरण ऋग्वेद में दिया गया है, वह यथार्थ इतिहास है। वैदिक संहिताओं में अनेक ऐसे सूक्त विद्यमान हैं, जिनमें कतिपय राजाओं के दान आदि की स्तुति की गई है। उदाहरणार्थ ऋग्वेद के एक सूक्त में ऋषि वशोव्य ने कानीत पृथुश्रवा के दान की भूरि-भूरि प्रशंसा की है और उन द्वारा दिए हुए साठ हजार घोड़ों, दो हजार ऊटों तथा दस हजार गौओं का उल्लेख है। ऐसी कितनी ही दान स्तुतियां ऋग्वेद में हैं, जिनसे वैदिक युग के प्रतापी एवं दानी राजाओं का परिचय प्राप्त किया जा सकता है। वेदो में अनेक नदियों, पर्वतों, जनपदों, जातियों तथा राज्यों के नाम भी मिलते हैं। सप्तसिंधव देश की सरस्वती , सिंधु आदि सात नदियों गंगा और यमुना तथा अन्य अनेक नदियों के नाम ऋग्वेद में विद्यमान हैं। गांधार, कीकट आदि कितने ही जनपदों व प्रदेशों के नाम भी वेदों में आए हैं। इन सबका उल्लेख यह सूचित करता है कि वेदों में ऐसी सामग्री विद्यमान है, जिसका उपयोग इतिहास के प्रयोजन से किया जा सकता है। ऋग्वेद में आए नदियों के नामों के आधार पर यह प्रतिपादित किया जाता है कि उस काल में आर्यों का भारत में कहां तक प्रसार हुआ था। ऋग्वेद की नदियों का संबंध प्रायः उत्तर-पश्चिमी प्रांत एवं पंजाब-हरियाणा के प्रदेशों के साथ है। अतः यह समझा जाता है कि ऋग्वेद के समय में आर्य प्रायः इन्हीं प्रदेशों में बसे हुए थे। बाद में उनका प्रसार पूर्व तथा दक्षिण की ओर हुआ। अथर्ववेद तथा ब्राह्मण ग्रंथों में आर्य जाति के प्रसार की इस प्रक्रिया के संबंध में अनेक संकेत उपलब्ध होते हैं। पर जो विद्वान वेदों को ईश्वरकृत मानते हैं, वे यह कह सकते हैं कि वेद तो अनादि और नित्य हैं। उनका संबंध किसी एक देश के साथ न होकर संपूर्ण विश्व तथा संपूर्ण मनुष्य जाति के साथ है।

अतः उनके आधार पर भारतीय इतिहास के एक विशिष्ट युग की सभ्यता तथा संस्कृति का प्रतिपादन भी युक्तिसंगत नहीं होगा। पर इस कथन में विशेष सार नहीं है। हमने वैदिक युग उस काल को कहा है, जिसमें गृत्समद, अत्रि, वशिष्ठ, कान्य आदि ऋषियों ने वेद मंत्रों का दर्शन किया था और उनके द्वारा वैदिक सूक्तों

के अभिप्राय को स्पष्ट किया गया था। यह आशा की जानी चाहिए कि उस समय के लोग वेद की शिक्षाओं का अनुसरण करते होंगे और उनका जीवन प्रायः वैसा ही होगा जैसा कि वैदिक साहित्य में वर्णित है। भारत के अतिरिक्त किसी अन्य देश में भी प्राचीन काल में वेदों की वही मान्यता थी जो भारत में थी। यह विषय विवादग्रस्त है। यह सही है कि गत वर्षों में पुरातत्व संबंधी खोज द्वारा ऐसे संकेत व प्रमाण मिले हैं, जिनमें पश्चिमी एशिया के अनेक प्रदेशों में वैदिक धर्म तथा सभ्यता की सत्ता सूचित होती है।

निष्कर्ष

यह सर्वथा सुनिश्चित है कि वैदिक सभ्यता और संस्कृति का प्रमुख केंद्र भारत ही रहा है। अतः भारतीय इतिहास के वैदिक युग के धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन के परिचय के लिए वैदिक साहित्य के उपयोग में किसी को भी ऐतराज नहीं होना चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ

1 ऋग्वेद, वैदिक संशोधन मंडल, पूना
2 अथर्ववेद, वेणीराम शर्मा गौड़, चौखम्बा, वाराणसी
3 वैदिक संस्कृति की पुनर्घटना, अप्रबुद्ध, अमरावती
4 निरुक्त, गुरुमण्डल ग्रंथमाला, कलकत्ता
5 महाभारत, गीता प्रेस, गोरखपुर
6 ऋक्तंत्र, सूर्यकांत शास्त्री, लाहौर